

سُورَةُ النَّجْمِ

Surah 53 — An-Najm (The Star) · Meccan · 62 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ إِذَا هَوَىٰ

तारे की कसम जब टूटा

2

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ

कि तुम्हारे रफीक (मोहम्मद) न गुमराह हुए और न बहके

3

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ

और वह तो अपनी नफसियानी स्वाहिश से कुछ भी नहीं कहते

4

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ

ये तो बस वही है जो भेजी जाती है

5

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ

इनको निहायत ताकतवर (फ़रिश्ते ज़िबरील) ने तालीम दी है

6

ذُو مِرَّةٍ ۖ فَاسْتَوَىٰ

जो बड़ा ज़बरदस्त है और जब ये (आसमान के) ऊँचे (मुशरको) किनारे पर था तो वह अपनी (असली सूरत में) सीधा खड़ा हुआ

7

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ

फिर करीब हो (और आगे) बढ़ा

8

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى

(फिर जिबरील व मोहम्मद में) दो कमान का फ़ासला रह गया

9

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ

बल्कि इससे भी करीब था

10

فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ ۖ مَا أَوْحَىٰ

खुदा ने अपने बन्दे की तरफ जो 'वही' भेजी सो भेजी

11

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ

तो जो कुछ उन्होंने देखा उनके दिल ने झूठ न जाना

12

أَفْتُمِرُّونَهُ ۖ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ

तो क्या वह (रसूल) जो कुछ देखता है तुम लोग उसमें झगड़ते हो

13

وَلَقَدْ رَءَاهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ

और उन्होंने तो उस (जिबरील) को एक बार (शबे मेराज) और देखा है

14

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ

सिदरतुल मुनतहा के नज़दीक

15

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ

उसी के पास तो रहने की बेहिश्त है

16

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ

जब छा रहा था सिदरा पर जो छा रहा था

17

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ

(उस वक्त भी) उनकी आँख न तो और तरफ़ माएल हुई और न हद से आगे बढ़ी

18

لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ ءَايَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ

और उन्होंने यक़ीनन अपने परवरदिगार (की कुदरत) की बड़ी बड़ी निशानियाँ देखीं

19

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّتَ وَالْعُزَّىٰ

तो भला तुम लोगों ने लात व उज्ज़ा और तीसरे पिछले मनात को देखा

20

وَمَنَوَۃَ الثَّالِثَةِ الْاُخْرَىٰ

(भला ये खुदा हो सकते हैं)

21

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ

क्या तुम्हारे तो बेटे हैं और उसके लिए बेटियाँ

22

تِلْكَ إِذْۢأۡ۟ۤا قِسْمَةُ۟۟ ضِيزَىٰ

ये तो बहुत बेइन्साफ़ी की तक़सीम है

23

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءُ ۚ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَءَابَاؤُكُمْ مَّا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمُ الْهُدَىٰ

ये तो बस सिर्फ नाम ही नाम है जो तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने गढ़ लिए हैं, खुदा ने तो इसकी कोई सनद नाज़िल नहीं की ये लोग तो बस अटकल और अपनी नफ़सानी ख्वाहिश के पीछे चल रहे हैं हालाँकि उनके पास उनके परवरदिगार की तरफ से हिदायत भी आ चुकी है

24

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّى

क्या जिस चीज़ की इन्सान तमन्ना करे वह उसे ज़रूर मिलती है

25

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ

आख़ेरत और दुनिया तो ख़ास खुदा ही के एख्तेयार में हैं

26

ۚ وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ ۚ فِي السَّمَوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ ۚ بَعْدَ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَىٰ

और आसमानों में बहुत से फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम न आती, मगर खुदा जिसके लिए चाहे इजाज़त दे दे और पसन्द करे उसके बाद (सिफ़ारिश कर सकते हैं)

27

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةً الْأُنْثَىٰ

जो लोग आख़ेरत पर ईमान नहीं रखते वह फ़रिश्तों के नाम रखते हैं औरतों के से नाम हालाँकि उन्हें इसकी कुछ ख़बर नहीं

28

وَمَا لَهُمْ بِهِ ۚ مِنْ عِلْمٍ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۚ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ

वह लोग तो बस गुमान (ख़याल) के पीछे चल रहे हैं, हालाँकि गुमान यक़ीन के बदले में कुछ भी काम नहीं आया करता,

29

فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّى عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

तो जो हमारी याद से रदगिरदानी करे और सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी ही का तालिब हो तुम भी उससे मुँह फेर लो

30

ذَلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ
أَهْتَدَى

उनके इल्म की यही इन्तिहा है तुम्हारा परवरदिगार, जो उसके रास्ते से भटक गया उसको भी खूब जानता है, और जो राहे रास्त पर है उनसे भी खूब वाकिफ है

31

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا ۚ بِمَا عَمِلُوا ۚ وَيَجْزِيَ
الَّذِينَ أَحْسَنُوا ۚ بِالْحُسْنَى

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) खुदा ही का है, ताकि जिन लोगों ने बुराई की हो उनको उनकी कारस्तानियों की सज़ा दे और जिन लोगों ने नेकी की है (उनकी नेकी की जज़ा दे)

32

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ
أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ ۚ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْا
أَنْفُسَكُمْ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ أَتَقَى

जो सगीरा गुनाहों के सिवा कबीरा गुनाहों से और बेहयाई की बातों से बचे रहते हैं बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ी बख्शिश वाला है वही तुमको खूब जानता है जब उसने तुमको मिटटी से पैदा किया और जब तुम अपनी माँ के पेट में बच्चे थे तो (तकबुर) से अपने नफ्स की पाकीज़गी न जताया करो जो परहेज़गार है उसको वह खूब जानता है

33

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّى

भला (ऐ रसूल) तुमने उस शख्स को भी देखा जिसने रदगिरदानी की

34

وَأَعْطَى قَلِيلًا ۚ أَوَكَدَى

और थोड़ा सा (खुदा की राह में) दिया और फिर बन्द कर दिया

35

أَعِنْدَهُ؟ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَى

क्या उसके पास इल्म-ए-ग़ैब है कि वह देख रहा है

36

أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَى

क्या उसको उन बातों की खबर नहीं पहुँची जो मूसा के सहीफ़ों में है

37

وَأِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّى

और इबराहीम के (सहीफ़ों में)

38

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ

जिन्होंने (अपना हक़) (पूरा अदा) किया इन सहीफ़ों में ये है, कि कोई शख्स दूसरे (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाएगा

39

وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ

और ये कि इन्सान को वही मिलता है जिसकी वह कोशिश करता है

40

وَأَن سَعْيُهُ؟ سَوْفَ يُرَىٰ

और ये कि उनकी कोशिश अनक़रीब ही (क़यामत में) देखी जाएगी

41

ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ

फिर उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा

42

وَأَن إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ

और ये कि (सबको आखिर) तुम्हारे परवरदिगार ही के पास पहुँचना है

43

وَأَنَّهُ ۖ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى

और ये कि वही हँसाता और रूलाता है

44

وَأَنَّهُ ۖ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا

और ये कि वही मारता और जिलाता है

45

وَأَنَّهُ ۖ خَلَقَ الذَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى

और ये कि वही नर और मादा दो किस्म (के हैवान) नुत्फे से जब (रहम में) डाला जाता है

46

مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَى

पैदा करता है

47

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْآخِرَى

और ये कि उसी पर (कयामत में) दोबारा उठाना लाज़िम है

48

وَأَنَّهُ ۖ هُوَ أَغْنَى وَأَقْنَى

और ये कि वही मालदार बनाता है और सरमाया अता करता है,

49

وَأَنَّهُ ۖ هُوَ رَبُّ الشَّعْرِى

और ये कि वही योअराए का मालिक है

50

وَأَنَّهُ ۖ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَى

और ये कि उसी ने पहले (क्रौमे) आद को हलाक किया

51

وَتَمُودًا ۚ فَمَا أَبْقَىٰ

और समूद को भी ग़रज़ किसी को बाक़ी न छोड़ा

52

وَقَوْمَ نُوحٍ ۚ مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا ۚ هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ

और (उसके) पहले नूह की क़ौम को बेशक ये लोग बड़े ही ज़ालिम और बड़े ही सरकश थे

53

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ

और उसी ने (क़ौमे लूत की) उलटी हुई बस्तियों को दे पटका

54

فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ

(फिर उन पर) जो छाया सो छाया

55

فَبِأَيِّ آءَالٍ رَّبِّكَ تَتَمَارَىٰ

तो तू (ऐ इन्सान आखिर) अपने परवरदिगार की कौन सी नेअमत पर शक़ किया करेगा

56

هَٰذَا نَذِيرٌ ۚ مِّنَ النَّذِرِ الْأُولَىٰ

ये (मोहम्मद भी अगले डराने वाले पैग़म्बरों में से एक डरने वाला) पैग़म्बर है

57

أَزِفَتْ آلْءَازِفَةُ

कयामत क़रीब आ गयी

58

لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ

खुदा के सिवा उसे कोई टाल नहीं सकता

59

أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ

तो क्या तुम लोग इस बात से ताज्जुब करते हो और हैंसते हो

60

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ

और रोते नहीं हो

61

وَأَنْتُمْ سُمِدُونَ

और तुम इस क़दर ग़ाफ़िल हो तो खुदा के आगे सजदे किया करो

62

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَأَعْبُدُوا ۚ

और (उसी की) इबादत किया करो (62) सजदा